बाबा ने बनाया सहनशील

ब्रह्माकुमारी ललिता,
सारणी (म.प्र.)

अप्रैल, 2013 की बात है, मैं और मेरे पति एक लौकिक रिश्तेदार के यहां कार्यक्रम में जा रहे थे। साथ में मेरी बहन, भैया और भाभी भी थे। पति और भैया दोनों बाइक से गये और हम तीनों बहनें बस से गये। गांव पहुँचकर बस से उतरकर हम तीनों ने ऑटो ले लिया। ऑटो में बैठे दो मिनट ही हुये थे कि ऑटो वाले का फोन बजा। वो बातें करने लगा और तेज गति से चलता हुआ ऑटो पुलिया के ऊपर की लोहे की रैलिंग से ज़ोर से टकराता हुआ, घिसटता हुआ आगे बढ़ने लगा। मैंने शिवबाबा को याद किया, उस समय आंखों के सामने एक तेज़ ज्योति आई। मैं अपने दोनों हाथों से ऑटो को मजबूती से पकड़े हुए थी। जैसे ही ऑटो रुका, मैंने बहनों को कहा, उतरो, हम दूसरे ऑटो से चलेंगे। वे दोनों उतर गईं लेकिन मुझसे उतरा ही नहीं जा रहा था। साड़ी उठाकर पैर देखा तो घुटने से लेकर पंजे तक वह फट गया था और पंजा तो रैलिंग की राड घुसने से छलनी हो गया था। उस अवस्था में भी मुझे उतना दर्द महसूस नहीं हो रहा था। मैंने बाबा से बातें करनी शुरू की, बाबा, यह क्या हो गया है, आपने कहा है, अचानक के पेपर में पास होना है। मैंने ऑटो वाले से कहा, भैया, मुझे हास्पिटल ले चलो।

धीरज नहीं खोया

दोनों बहनें मुझे देखकर जोर-जोर से रोने लगी। उनको कुछ भी नहीं लगा था। मेरे पैर से खून बहता जा रहा था। मैंने उसे हाथों से पकड़े रखा और धीरज नहीं खोया क्योंकि बाबा मेरे साथ था। ऑटो वाला हमें गांव के हॉस्पिटल में ले गया। मेरी हालत देखकर वहाँ का डॉक्टर घबरा गया। उसने फोन करके मेरे पति और भैया को खबर दी और पट्टियाँ लपेट कर खून बंद करने की कोशिश की लेकिन नाकाम रहा। उसने सारणी ले जाने के लिए कहा। मैं तो बाबा से बातें कर रही थी कि बाबा, यह जो कुछ भी हुआ है, ड्रामानुसार है, मेरा ही कोई बड़ा हिसाब-किताब चुक्ता हो रहा है और अब जो कुछ भी होगा, आप जानते हैं। आप मेरे साथ सदा रहना, मुझे पेपर में पास होना है। हम गाड़ी करके सारणी हास्पिटल में आये। वहाँ से मुझे पाढ़र हास्पिटल रैफर किया गया। वहाँ खून बहना बंद किया गया और आगे नागपुर रैफर कर दिया गया।

बाबा का सुन्दर स्वरूप देखा

नागपुर में जांच के तुरन्त बाद खून की कई बोतलें चढ़ाकर ऑपरेशन किया गया। जब मुझे ऑपरेशन थियेटर में ले जा रहे थे, तब मेरी आंखें खुली थी, सामने ब्रह्मा बाबा का स्वरूप देखा। एक तेज़ चक्र देखा, उसमें बाबा का इतना सुन्दर चेहरा देखा जो मैंने पहले कभी नहीं देखा था, न चित्रों में, न ही वीडियो में। मैं उस चेहरे को कभी भूल नहीं सकती। मैं तो इतनी खुश हो गई जैसे कि बाबा ही मेरा ऑपरेशन कर रहे हैं। मुझे कुछ भी डर नहीं लग रहा था। तीसरी बार सर्जरी हुई तब ऐसा लग रहा था कि बाबा मुझसे कह रहे हैं, बच्ची, हिम्मत रखना, सब कुछ ठीक हो जायेगा। इस प्रकार बाबा मेरे साथ रहे।

सहनशक्ति की तारीफ

ऑपरेशन के तीन माह बाद तक बेड रेस्ट के बाद धीरे-धीरे पैर चलने-फिरने लायक हो गया। हॉस्पिटल में डाक्टरों ने मेरी सहनशक्ति की सदा तारीफ की। वे दूसरे मरीजों को भी मेरा उदाहरण देकर शांत कर देते थे

कि देखो उस बहन को कितनी चोट लगी है फिर भी बिल्कुल शांत है। राजयोगी जीवन में शरीर से न्यारा होने का अभ्यास और बाबा का साथ हमें असीम सहनशक्ति प्रदान करता है, यह मैंने अनुभव किया। इन परिस्थितियों में मुझे ईश्वरीय परिवार से और लौकिक परिवार से भरपूर सहयोग मिला। मैं बापदादा का दिल से शुक्रिया करती हूँ कि उन्होंने सबको मेरा सहयोगी बना दिया। धन्यवाद करती हूँ दिल से ईश्वरीय परिवार का और निमित्त बहन का जिन्होंने विषम परिस्थितियों में भी मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया। ☺

विकार का अनछुआ 'ऑपरेशन'

➡ डॉ.सम्राट सुधा, रुड़की

'राखी बंधवाने के बदले हमें आपसे रुपये नहीं वरन् किसी विकार का दान (परित्याग) चाहिए। ध्यान रखिए, जो चीज़ दान में दी जाती है वह न आपके पास रह जाती है, न वापिस माँग सकते हैं...।' रुड़की (उत्तराखंड) के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर यह मेरा दूसरा दिन था। पर्व था रक्षाबन्धन और प्रवचन दे रही थी ब्र.कु.बहन। ब्रह्माकुमारी बहनों का हृदय कितना उच्च और उदार है, मेरे मन में यह आया। अज्ञात भय जो पिछले कुछ महीनों से दिन में एक या अधिक बार रह-रहकर हृदय में आ रहा था, रक्षाबंधन पर्व पर निमित्त बहन से राखी बंधवाकर लुप्त ही हो गया। जैसे शरीर का एक बड़ा फोड़ा बाबा की कृपा से बिना कोई निशान छोड़े व बिना पीड़ा के 'ऑपरेट' हो गया हो!! दीदियों का ऐसा निश्छल स्नेह, ऐसा अनोखा रक्षाबंधन-पर्व और विकार का ऐसा तत्क्षण समाधान, पूर्व में न हुआ था। बाबा ने मुझे अपना बना लिया।

सेवाकेन्द्र पर मुझे जो प्रसाद मिला उसमें श्रेष्ठता के वायब्रेशन थे। ग्रहण करते ही अद्भुत शान्ति की अनुभूति हुई। इसके बाद राजयोग की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। आत्मा क्या है, मन क्या है, तीन लोक कौन-से हैं, शिव और शंकर में अन्तर, मनुष्य के 84 जन्मों की अद्भुत कहानी आदि के सन्दर्भ में तार्किक जानकारी राजयोग पाठ्यक्रम से मिली। 'सृष्टि रूपी उल्टा व अद्भुत वृक्ष और उसके बीजरूप परमात्मा' अध्याय ने ज्ञानचक्षु खोल दिये।

अब अनवरत सायंकालीन मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) क्लास में जा रहा हूँ। बाबा प्रत्येक शंका का समाधान 'मुरली' में देते हैं। याद की यात्रा, अपने दैनिक-चार्ट का स्मरण, जो बाबा पर फिदा होगा, उसे बाबा की शक्तियाँ मिलेंगी, संकल्प दृढ़ हो, सुजान होकर बैठना है, योग परफेक्शन के लिए है, हम आये हैं – हेल्थ, वेल्थ तथा हैपीनेस का वर्सा लेने, याद करने से विकर्म नाश होंगे, कुछ भी देना है, तो बाबा को याद करके देना है, बेगमपुर के बादशाह बनो, बाप को अपना वारिस बनाओ आदि अनेक सन्देश बाबा मुरली के माध्यम से प्रत्येक दिन देते हैं और मुरली के इन स्वरों से मेरा आत्म-पुष्प निरन्तर खिलता जा रहा है। कुछ स्वरचित पक्तियाँ इस प्रकार हैं –

आओ शिव से योग लगाकर, पायें अपना पुण्य रूप,
फिर ना होगी रात गहरी, और ना होगी चुभती धूप।
अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ में, कर दें हम विकारों को होम,
जग में गूंजे अनवरत, ओम् शान्ति ओम्।।